Class - XI
Period - 1st
Date - 18-12-2021

Date
Page 1

Q→ स्पिनोजा के ईश्वर की अवधारणा स्पष्ट करें ?

Ans→ स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर और सृष्टि में अभेद सम्बन्ध है। ईश्वर ही सृष्टि का कारण है, परन्तु उसने 'कारण-कार्य' का प्रयोग प्रचलित अर्थों में नहीं किया है। ईश्वर जगत की रचना उस प्रकार नहीं करता है जिस प्रकार कुम्भकार घड़े को बनाता है। सृष्टि की रचना में ईश्वर का कोई प्रयोजन नहीं हो सकता क्योंकि स्पिनोजा का ईश्वर पूर्ण है। अस्तु आप्तकाम होने के कारण उसकी कोई इच्छा नहीं हो सकती। ब्रह्माण्ड की सत्ता ईश्वर से परे नहीं है, क्योंकि व 'संकल्प' के रूप में। ब्रह्माण्ड में बुद्धि एवं संकल्प का स्वतन्त्र रूप से अस्तित्व ही सृष्टि का अधिष्ठान है।

स्पिनोजा की सृष्टिमीमांसा प्लाटिनस के निष्क्रमण सिद्धांत से भिन्न है। ईश्वर सृष्टि का निष्कर्षण तर्कतः सम्भव नहीं है, क्योंकि ईश्वर से बाहर कुछ नहीं है। निष्क्रमण तभी सम्भव हो सकता है, जब ईश्वर के बाहर कुछ हो, स्पिनोजा का ईश्वर असीम और

Teacher's Signature

सर्वगत सत्ता है। अतः ईश्वर और सृष्टि में देशिक और कालिक सम्बन्ध नही हो सकता है। उल्लेखनीय है कि प्लाटिनस ने सृष्टि की रहस्यवादी व्याख्या की है।

स्पिनोज़ा सृष्टि का निमित्त एवं उपादान कारण दोनों मानता है। इस दृष्टि से वह अपने ईश्वर को विभिन्न पाश्चात्य धर्मों में मान्य ईश्वर के सम्प्रत्यय से अलग कर लेता है।

डेकार्ट के ईश्वर के समान स्पिनोज़ा का ईश्वर किसी लोकोत्तर जगत की सत्ता नही है। स्पिनोज़ा के अनुसार सृष्टि किसी दैवीय चमत्कार की देन नही है। यह ईश्वर के स्वभाव से उसी प्रकार उत्पन्न होती है, जिस प्रकार सूर्य की किरणों से प्रकाश अथवा त्रिभुज के स्वरूप से तीन कोणों का होना। इस प्रकार उसकी सृष्टिमीमांसा मध्यकालीन दार्शनिकों के दैवी चमत्कार पर आधारित जगत की अवधारणा से भिन्न है। स्पिनोज़ा के दर्शन को सर्वेश्वरवाद कहा जाता है, क्योंकि सब कुछ ईश्वरमय है और ईश्वर ही सत् है।